महामानव गांधी जी के विचारों में राजनीतिक आध्यात्मीकरण : एक विशेष अध्ययन

सुनील भाटी [1]

[1] **पूर्व सहायक आचार्य [अतिथि शिक्षक], राजनीति विज्ञान, राजकीय महाविद्यालय देवली कलां जिला ब्यावर, राजस्थान.**

ABSTRACT:

प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में समय विशेष के अनुसार किसी न किसी महापुरुष का अवतरण अवश्य होता है जो तत्कालीन युगीन परिस्थितियों को संस्कारित बनाते हुए न केवल उन्हें श्रेष्ठ प्रतिमान देता वरन् उसको उन्नति, प्रगति, यश, कीर्ति और ख्याति के विभिन्न आयाम भी प्रदान करता है। जबकि भारत भूमि की यह मान्यता रही है कि यहाँ जब कभी भी अध्यात्म की हानि होती है तो किसी न किसी युग पुरुष का जन्म अवश्य होता है जो अपने अद्भुत कार्यों और व्यवहार से समय के प्रवाह पर ऐसे चित्र अंकित कर देता है जिन्हें युगों युगों तक जनमानस की श्रद्धा व प्रेरणा का आधार के रूप में परिलक्षित किया जा सकता है। महात्मा गाँधी एवं गोपाल कृष्ण गोखले भी भारत भूमि पर जन्मे ऐसे ही महान नायक हैं जिन्होंने अपनी आध्यात्मिक ऊर्जाओं से संपूर्ण युग को एक नया रूप प्रदान किया। उन्होंने सत्य अहिंसा और सत्याग्रह के माध्यम से अपने विचारों तथा कार्यों को न केवल व्यावहारिक रूप प्रदान किया अपितु जीवन के प्रत्येक कार्य के पीछे निहित आध्यात्मिक और धार्मिक प्रेरणाओं को उजागर किया। वर्तमान युग इसी आध्यात्मिक ऊर्जा की मांग कर रहा है। आज वास्तव में महामना गाँधी के विचारों की आध्यात्मिकता और गोपाल कृष्ण गोखले का नैतिक चिंतन राजनीतिक धरातल के लिए अत्यधिक आवश्यक है। क्योंकि वर्तमान परिदृश्य में राजनीति का जो स्वरूप नैतिक ह्रास और मूल्यों के पतन से युक्त दृष्टिगोचर दिखाई देता है उसको महामना गाँधी के विचारों के माध्यम से ही परिष्कृत, परिमार्जित और संशोधित किया जा सकता है। यह आलेख महामाना गाँधी के राजनीतिक आआध्यात्मीकरण पर बल देता है।

KEYWORDS:

महामानव, गांधीजी, वैचारिक आध्यात्मीकरण, राजनीतिक, वर्तमान, परिदृश्य, आयाम, परिस्थितियां।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
5th April 2024	7th April 2024

प्रस्तावना

आज भी आध्यात्मिक ऊर्जाएं भारत भूमि के कण कण में व्याप्त हैं। इन ऊर्जाओं ने भारतीय मिट्टी को हमेशा से ही ईश्वर के प्रति आसक्तिपूर्ण, आस्थावान और विश्वासी स्वरूप प्रदान किया है। इन्हीं ऊर्जाओं के बल पर मानव अपने जीवन मूल्यों, आदर्शों, नैतिक भावनाओं और चारित्रिक उच्चताओं से युक्त होता है। भारतवर्ष की ओर ध्यान दिया जाए तो भारतवर्ष आरंभिक काल से ही अध्यात्म प्रधान राष्ट्र रहा है जिसकी शस्यश्यामला धरती अलौकिक, दिव्य विशेषताओं के कारण संपूर्ण विश्व के आकर्षण का केंद्र रही है। अपनी आध्यात्मिक विशिष्टताओं के कारण ही भारत भूमि ने हमेशा से देवताओं को भी अपनी ओर आकृष्ट किया है। इस पृथ्वी पर जन्म लेकर मुक्ति की प्राप्ति करना भी आध्यात्मिक भावना का ही एक भाग है।

भारत भूमि सदा से ऋषियों की तपस्थली के रूप में विख्यात रही है। ऋषि मुनियों ने अपनी कठिन तपस्याओं के बल पर वेद मंत्रों का साक्षात्कार कर जन कल्याण के लिये श्रुति परंपरा से उनको उपदिष्ट किया। इस पृथ्वी पर धर्म अर्थ काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों की सिद्धि मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य रहा है। जन्म मृत्यु के रहस्य को खोज कर प्राणियों की दुख निवृत्ति के उपाय बताना भारतीय दर्शन का प्रमुख लक्ष्य रहा है। इस प्रकार प्रत्येक दृष्टि से भारत भूमि अध्यात्मशीलता का केंद्र रही है और इसी आध्यात्मिक भावना से इस पृथ्वी पर जन्मे बड़े बड़े महापुरुष हमेशा उससे ओत-प्रोत रही है। ऋग्वेद जो भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ माना जाता है, अपनी आध्यात्म प्रधानता और विविध प्रकार के अलौकिक ज्ञान भण्डार के कारण भारत को विश्व गुरु के श्रेष्ठ पद पर प्रतिष्ठित करा दिया है। ऋग्वेद से लेकर समस्त वैदिक साहित्य भारतीय मनीषियों के उत्कृष्टम ज्ञान का परिचय कराता है।

अध्यात्म से अभिप्राय

इस सृष्टि में मनुष्य के जीवन का स्वभाव व्यग्र, अशान्त, अवसाद और संकट युक्त है। यह अस्पष्ट सामर्थ्य एवं व्याकुल कर देने वाली शक्तियों के मध्य फंस कर सदैव उन गहन कुप्रभावों को समझने व उन पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करता रहता है। इस अवच्छिन्न नाट्यपूर्ण जीवन में मनुष्य के समक्ष एक निश्चित उद्देश्य होता है कि वह अपनी परिमित्तता से स्वतंत्र तथा अन्तःकरण की सीमाओं से मुक्त होकर उस परमतत्त्व में विलीन हो जाए। इस निर्णीत लक्ष्य की पूर्ति हेतु ही वह अपनी साधना में लीन होने लगता है तथा वह साधना उसे अध्यात्म मार्ग की ओर लेकर जाती है। आनन्द भी अध्यात्म ही है क्योंकि वहां उस परमात्मा का वास होता है। इस हेतु मनुष्य को अपनी इन्द्रियवश प्रयोजनों की आकांक्षाओं व सहज प्रवृत्ति को संयम कर उन्हें त्यागना चाहिए ताकि वह आत्मज्ञान की ओर अग्रसर हो सके। इसी रीति से अपनी कुवृत्तियों व चित्तवृत्तियों का निरोध कर वह परमतत्त्वाभिमुख हो जाता है और यह आध्यात्म ही सर्वसुख का साधन है।

यह आध्यात्मिकता ही भारतीय संस्कृति का सुदृढ़ आधार है। आध्यात्म शब्द की उत्पत्ति 'अधि' उपसर्ग तथा 'आत्मन्' शब्द मिलाने से हुई है जिसके अर्थ की व्याख्या है- "आध्यात्मं 'आत्मानं देहमिन्द्रियादिव्यं क्षेत्रज्ञ ब्रह्म व अधिकृतम् आध्यात्मचेत्रम्" अर्थात ईश्वर का ध्यान करने या चिन्तन करने वाला व्यक्ति। आत्मा और ब्रह्म का विवेचन, ज्ञानतत्व, आदि का आत्मज्ञान से तात्पर्य ही अध्यात्म है। आत्मनः संवद्धम् – आत्मा का व्यक्ति से संबंध रखने वाला तम्म् (अव्य) आत्मा से संबंध, परब्रह्म (व्यक्ति के रूप में प्रकट) या आत्मा और परमात्मा का संबंध है।

स्वामी शिवोम तीर्थ के अनुसार, "आध्यात्म मनुष्य का ध्येय है" अर्थात् आध्यात्म से मनुष्य आत्मस्थिति की ओर अग्रसर होकर अपने लाखों-करोड़ों जन्मों के द्वन्द्वों की दलदल से अपने आपको निकाल कर परमात्मा की ओर अभिमुख हो सकता है।"

विलियम जेम्स ने आध्यात्म की परिभाषा में धर्म की अपेक्षा नैतिक मूल्यों पर अधिक बल दिया है। उन्हीं के शब्दों में "आध्यात्मवाद उसे कहते हैं जो यह विश्वास दिलाता है कि, जगत में एक शाश्वत नैतिक व्यवस्था है और जिससे प्रचुर आशा मिलती है। धार्मिक रचनाओं में चित्, आध्यात्मिक, आध्यात्मिकता शब्दः सदा ही विद्यमान रहते है। ये शब्द सर्वोच्च महत्व की वस्तुओं की ओर निर्देश करते हैं। चित् मनस् से कोई भिन्न वस्तु नहीं है। वरन् मनस् को मूल्य के दृष्टिकोण से देखना चित्त है।"

प्रसिद्ध फ्रेडरिक मैक्समूलर ने आध्यात्म की प्राचीनता को दर्शाते हुए कहा है कि- "आध्यात्म कोई नया आविष्कार नहीं है। यह उतना पुरातन नहीं जितना कि संसार, तो कम से कम उस

संसार के बराबर पुरातन है। जिस प्रकार संसार को हम जानते हैं। जब से हमें मनुष्य की भावनाओं और विचारों का कुछ भी ज्ञान हुआ है, तब से हम देखते हैं कि उस पर आध्यात्म का प्रभाव है या वह आध्यात्म से अभिभूत है। अतः आध्यात्म मानव जीवन का मूल आधार है किन्तु वर्तमान भौतिक विकास और उन्नति के चकाचौंध में मनुष्य उन्मुक्त हो उठा है, वह आध्यात्म के मौलिक स्वरूप को भूलता जा रहा है। फलस्वरूप आज समस्त विश्व में नितान्त अराजकता, अशान्ति और असन्तोष का वातावरण फैलता जा रहा है। अतएव आध्यात्म एवं उसके मौलिक स्वरूप को प्रकाशित करना नितान्त आवश्यक जान पड़ता है।"

राजनीतिक आध्यात्मीकरण

भारतीय संस्कृति के जितने भी पक्ष हैं सभी इतने गहरे हैं कि उन्हें समझने के लिए शब्दों से अधिक अनुभूति की आवश्यकता होती है। शब्दों या परिभाषा के माध्यम से भारतीय संस्कृति के अध्यात्म पक्ष को समझना असंभव है। उसके आध्यात्मिक पहलू को जानना, रहस्यों को पहचान पाना अनुभूति पक्ष का एक अंग है। व्यक्तित्व में श्रेष्ठ गुणों की समष्टि हेतु स्व अनुभूति ही भारतीय संस्कृति की आधारशिला है और इस तत्व की प्राप्ति अध्यात्म के माध्यम से होती है। अध्यात्म को यदि राजनीति से जोड़ दिया जाए तो राजनीति में आध्यात्मिक विचारों की समाविष्टि ही राजनीतिक आध्यात्मिकरण के रूप में जाना जाती है। राजनीति का यह दृष्टिकोण राजनीति को और अधिक उन्नत, श्रेष्ठ, सुसंयत, संस्कृत और दिव्य शक्तियों से युक्त कर देता है। जयप्रकाश नारायण जी ने कहा है – "राजनीति का आध्यात्मिकरण आवश्यक है। वास्तविक राजनीति वस्तुतः भ्रातृत्त्व का विस्तार है। इस दृष्टि से राजनीति नीति का ही विस्तार माना जायेगा। आदर्श से आदर्श राजनैतिक व्यवस्था एवं संविधान तभी कारगर हो सकते हैं, जब उसको चलाने वाले लोग नैतिक एवं आध्यात्मिक गुणों से सम्पन्न हों"।

विशेष रूप से राजनीतिक आध्यात्मिकरण राजनीति में धार्मिक भावनाओं की निहित अवस्था का प्रत्यक्ष रूप है। अर्थात वह कल्याणकारी कर्म जो अपनी प्रजा का शासन अपनात्व की भावना के साथ-साथ प्रेम, त्याग, अहिंसा, सद्भाव, समान दृष्टि, संस्कार, सत्य एवं दिव्यता के भाव के साथ किये जाए राजनीति का आध्यात्मिकरण है। यह राजनीतिक आध्यात्मिकरण किसी एक के प्रयास से नहीं वरन संपूर्ण सृष्टि के महाप्रयास से ही संभव है। राजनीतिक आध्यात्मिकरण को व्यापक रूप देने के लिए प्रत्येक शासन कर्ता का आध्यात्मिक भावनाओं से संयुक्त होना अत्यधिक आवश्यक है। जो कर्म अध्यात्म से प्रेरित होकर आध्यात्मिक दृष्टि से संचालित होगा, संस्कृत होगा उस कार्य में सर्व कल्याण निहित होगा। यदि हम अपने भारतवर्ष की प्राचीन राजनीति को गहनता के साथ अध्ययन करें तो पाएंगे की बड़े से बड़े राजा महाराजा अपने दैनिक जीवन में आध्यात्मिक भावनाओं से संपृक्त रहते थे। अपनी प्रजा पर पुत्रवत शासन करते थे। अर्थात हर दृष्टि से प्रेम पूर्वक उनका पालन पोषण करते थे। अपनी प्रजा को किसी भी रूप में समस्याओं से मुक्त करना और चिताओं से मुक्त रखना ही उनका प्रथम धर्म था। आज इस भावना की आवश्यकता वर्तमान राजनीति के लिए अवश्यंभावी है जिसकी प्राप्ति के लिए हमें महामना गांधी जी के आध्यात्मिक विचारों की ओर उन्मुख होना होगा।

महामानव गांधी जी के विचारों में राजनीतिक आध्यात्मीकरण

महात्मा गाँधी जी ने आध्यात्मिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर जो कुछ लिखा था, कहा अथवा आचरण किया वह एक समग्र जीवन दर्शन है। गाँधी जी ने हिन्दू धर्मशास्त्रों में निर्दिष्ट पाँच प्रमुख नैतिक सिद्धान्तों को राजनैतिक साधनों के रूप में अपनाया है। उनके विचारों में राजनेता एक सत्याग्रही है, उसे इन पाँच नैतिक सिद्धान्तों का आचरण करना चाहिए- सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह व ब्रह्मचर्य। महात्मा गाँधी जीवन दृष्टि पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि,- "मैं केवल सत्य का शोधक हूँ। मेरा दावा है कि मैं सत्य को पाने का सतत प्रयत्न कर रहा हूँ। परन्तु मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझे अभी तक वह मिला नहीं है। सत्य को पूरी तरह प्राप्त कर लेना अपने को और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेना है, अर्थात् संपूर्ण हो जाना है। मुझे अपनी अपूर्णताओं का दुःखद भान है और उसी में मेरा सारा बल समाया हुआ है, क्योंकि अपनी मर्यादाओं को जान लेना मनुष्य के लिये दुर्लभ वस्तु है"।

गाँधीजी आगे भी कहते हैं कि, "मैंने उस अंतर्यामी को देखा नहीं है और न उसे जाना है। मैंने ईश्वर में दुनिया का जो विश्वास है उसी को अपना लिया है और चूंकि मेरी श्रद्धा अमिट है इसलिए उस श्रद्धा को मैं अनुभव के समान समझता हूँ। परन्तु चूंकि उसके खिलाफ यह आक्षेप किया जा सकता है कि श्रद्धा को अनुभव बतांना सत्य का अलाप है, इसलिए शायद यह कहना अधिक सही होगा कि ईश्वर में अपने विश्वास का ठीक वर्णन करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं है"। "मेरा दावा है कि मैं बचपन से ही सत्य का पुजारी हूँ। मेरे लिये यह सबसे सहज और स्वाभाविक वस्तु थी। मेरी भक्तिपूर्ण खोज ने मुझे 'ईश्वर सत्य है के प्रचलित मंत्र के बजाय 'सत्य ही ईश्वर है' का अधिक गहरा मंत्र दिया। यह मंत्र मुझे ईश्वर को मानो अपनी आंखों के सामने प्रत्यक्ष देखने की क्षमता प्रदान करता है। मैं अनुभव करता हूँ कि वह मेरी रग-रग में समाया हुआ है"।

गाँधी जी ने अपने विचारों के द्वारा राजनीति को आध्यात्मिक धरातल पर रख कर उनका निर्वहन किया है। और अपने जीवन में आध्यात्मिक राजनीति के प्रमुख तत्वों को उतारा है। यही कारण था कि, उनकी राजनीतिक विचारधारा सत्य, अहिंसा, तप, त्याग और कल्याण से ओतप्रोत रही है। वह कहते हैं कि, अहिंसा मेरा ईश्वर है और सत्य मेरा ईश्वर है। जब मैं अहिंसा को ढूंढ़ता हूँ तो सत्य कहता है- 'मेरे द्वारा उसे खोजो। जब मैं सत्य की तलाश करता हूँ तो अहिंसा कहती है- 'मेरे जरिये उसे खोजों"।

उनके इन भावों में जो रहस्य व्याप्त थे वह यही है कि, प्रत्येक व्यक्ति उस परब्रह्म परमात्मा की शक्ति से व्याप्त है अतः अपने राष्ट्र का कल्याण अपना विकास यदि देखना चाहते हो तो जीव मात्र के प्रति समदृष्टि होकर उसका कल्याण करो। तभी राष्ट्र का विकास करने में सक्षम हो सकोगे। वर्तमान राजनीति ऐसी विचारधारा की अपेक्षा रखती है। लेकिन प्रासंगिक परिदृश्य की ओर दृष्टिपात करें तो चारों ओर राजनीति में भ्रष्टाचार, घूसखोरी, स्वार्थपरता, हिंसा, स्व हितसाधन, परपीड़ा, शोषण, लालच आदि अनेक दुर्गुण व्याप्त हैं। जिन को समाप्त करने के लिये वास्तव में गाँधी जी के विचारों को अपनाना अतिआवश्यक है।

गाँधी जी अपने विचारों को व्यक्त करते हुए आगे कहते हैं की आज मानव मात्र के कल्याण और उसके प्रेम ने मुझे अपनी ओर आकृष्ट कर लिया वह अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि, "उस सर्वव्यापी सत्यनारायण का साक्षात्कार करने के लिये मनुष्य के मन में छोटे से छोटे प्राणी के प्रति अपने ही जैसा प्रेम होना चाहिये और जो मनुष्य उसकी आकांक्षा रखता है वह जीवन के किसी क्षेत्र से बाहर नहीं रह सकता। उसी कारण से मेरे सत्यप्रेम ने मुझे राजनीति के क्षेत्र में घसीट लिया है, और मैं बिना किसी संकोच के किन्तु पूरी नम्रता के साथ कह सकता हूँ कि जो लोग यह कहते हैं कि धर्म का राजनीति के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है वे नहीं जानते कि धर्म का क्या अर्थ है"।

गाँधीजी में महामानवत्व कूट कूटकर भरा हुआ था यही कारण था कि, उनका हृदय जीवन के अंत तक सहृदयता के भाव से भरा रहा। मानव मात्र की सहायता के लिए वह देशभक्ति के मैदान में कूद गए और उन्होंने अपने जीवन का सर्वस्व अपने देश और देशवासियों के लिए न्योछावर कर दिया। इन्हीं भावों की संपृक्ति के कारण वे आगे कहते हैं कि, "मैं मानव जाति की सेवा के लिए ईश्वर-दर्शन का प्रयत्न कर रहा हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि ईश्वर न तो ऊपर स्वर्ग में है, न नीचे किसी पाताल में, वह तो हरएक के हृदय में विराजमान है"।

उनके अनुसार राजनीति का सच्चा अर्थ था अपनी संतान स्वरूप प्रजा की सच्चे हृदय से सेवा करना, उसका कल्याण करना, उसे हर प्रकार की चिंताओं से मुक्त कर सर्व साधन सुलभ कराना। ये सारे भाव एक शासक के हृदय में तभी आ सकते हैं जब वह आध्यात्मिक धरातल पर राजनीति की स्थापना करें।

जिनका हृदय लालच, स्वार्थपरता और सत्ता की लोलुपता से भरा हुआ हो वह परहित और जनकल्याण को कभी नहीं समझ सकते। इसके विपरीत महामना गाँधी जो संपूर्ण विश्व में राजनीतिक आध्यात्मिकरण को देखना चाहते थे हमेशा राज्य की आकांक्षा से विमुक्त रहे। भगवान शिव के समान विरागी होकर प्रजा के कल्याण के प्रति आसक्ति अलौकिक पुरुष के अंतर्गत ही हो सकती है। महात्मा गाँधी सत्ता के प्रति इस विरक्ति के भाव को अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं कि, -

"मुझे पृथ्वी के नश्वर राज्य की कोई आकांक्षा नहीं हैं। मैं तो स्वर्ग के राज्य अर्थात् मोक्ष के लिये प्रयत्न कर रहा हूँ। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये मुझे किसी गिरिगुफा की शरण लेने की आवश्यकता नहीं है। अगर मैं समझ सकूं तो वह गुफा मेरे भीतर ही मौजूद है। गुफावासी गुफा में रहते हुये भी मन के महल बना सकता है, जबकि जनक जैसा महल में रहने वाला ऐसा नहीं करता। गुफा में रहने वाला विचार के पंखों पर बैठकर संसार का चक्कर लगाता रहे तो उसे शान्ति नहीं मिलती। लेकिन जनक जैसे लोग 'शान-शौकत' से रहते हुये भी अकल्पनीय शान्ति प्राप्त कर सकते हैं। मेरे लिये मोक्ष का मार्ग यही है कि मैं अपने देश की और देश के द्वारा मानव जाति की सेवा के लिये अविश्रान्त परिश्रम करता रहूँ। मैं सब प्राणियों के साथ एकता स्थापित करना चाहता हूँ"।

वह राजनीतिक धरातल को समदृष्टि प्रदान करना चाहते हैं। अतः इन भावों को अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं कि, -

"मैं न केवल मानव कहलाने वाले प्राणियों के साथ ही भाईचारा या एकता महसूस करना चाहता हूँ, बल्कि सब प्राणियों के साथ, यहां तक कि पृथ्वी पर रेंगने वाले जीवों के साथ भी एकता साधना चाहता हूँ। आपको आघात न पहुंचे तो मैं यह कहूंगा कि मैं पृथ्वी पर रेंगने वाले प्राणियों के साथ एकता इसलिये चाहता हूँ कि हम एक ही ईश्वर की सन्तान होने का दावा करते हैं और अगर ऐसा है तो नाम-रूप कुछ भी हों, समस्त प्राणी वास्तव में एक ही है"।

गांधी जीवन दृष्टि और वैकल्पिक राजनीति अहिंसा पर आधारित है। उन्होंने अहिंसा का एक ऐसा सिद्धान्त प्रस्तुत किया, जिससे पूर्ववती राजनीति की दिशा ही बदल गई। उन्होंने राजनीति को मानव कल्याण का साधन माना। उन्होंने राजनीति में धर्म और नैतिकता को सम्मिलित किया तथा उन्होंने राजनीति में शुद्ध धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना की और राजनीति के शुद्धिकरण का कार्य किया।

धर्मनिरपेक्षता और प्रजातांत्रिक प्रणाली पर आधारित समाजवादी शासन व्यवस्था के लिए गाँधी जी संकल्पबद्ध थे। अपने युग की कुटिल राजनीति उन्हें आकर्षित नहीं कर सकी। उनका विचार था अच्छे साध्य की प्राप्ति, अच्छे साधन से ही हो सकती है और वह साधन है अहिंसा। अहिंसा ही उनके समस्त राजनीति का केन्द्र थी, अहिंसा में उनकी श्रद्धा थी। हिंसा के द्वारा प्राप्त स्वराज्य उन्हें स्वीकार नहीं था। इसीलिए उन्होंने कहा कि –

"मैं शुद्ध पवित्र हिंसा में श्रद्धा रखता हूँ। लाखों की जान मार कर हिंसात्मक साधनों द्वारा भारत के लिए स्वराज्य पाने की सम्भावना में मैं विश्वास नहीं करता"।

गाँधी ऐसे युग में अवतरित हुए, जबकि देश पराधीन था। शासक वर्ग देश का शोषण करता था तथा देश की राजनीतिक व्यवस्था चिन्तनीय थी। अविश्वास, ईर्ष्या, द्वेष, कलह, साम्प्रदायिकता, कपट, स्वार्थ का बोलबाला था। राजनीति और आध्यात्म का कोई सम्बन्ध नहीं था। सम्पूर्ण मानवता का भविष्य अंधकारमय था। ऐसी स्थिति में गाँधी जी ने राजनीति का आध्यात्मीकरण किया, राजनीति और धर्म को संयोजित किया और कहा कि,- 'मेरे लिए धर्म का अर्थ सत्य और अहिंसा है।"

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि, हमारी संस्कृति विश्व की संस्कृतियों में सबसे महान रही है। यहाँ पर भाईचारा, सम्पूर्ण समाज के प्रति कर्त्तव्य, विश्वबन्धुत्व की भावना, सहिष्णुतावादी विचारधारा आदि दृष्टिकोण भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित करती रही है, किन्तु दुःख की बात यह है कि व्यक्ति आज अपनी संस्कृति तथा अपने मौलिक कर्त्तव्यों को भूलता चला जा रहा है। आज व्यक्ति का जीवन पहले जैसा सुरक्षित नहीं है। आज अराजकता, आतंकवाद, बलात्कार, विद्वान व्यक्तियों की अवहेलना, भ्रूण हत्या, असत्य जैसे जघन्य अपराध की काली छाया ने समाज में कुछ लोगों को अन्धकार के पथ पर झोंक दिया है। इसी कारण समाज से समस्त जीवन मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है जिसका सीधा प्रभाव राजनीतिक दलों में प्रवेश करने वाले उन नेताओं पर है जो आध्यात्मिक भावनाओं से पूर्णतः हीन हैं।

आज व्यक्ति का जीवन आध्यात्म के प्रति विचलित होता दिखाई दे रहा है। आध्यात्म की अवहेलना का सबसे बड़ा कारण पाश्चात्य शिक्षा का प्रभावी होना है। आज पुनः समाज में गिरते हुए मूल्यों को बचाया जा सकता है तथा पुनः एक आदर्श समाज की स्थापना की जा सकती है। यह तभी सम्भव है, जब सभी निष्ठा और ईमानदारी से कार्य करे। इस प्रकार अपने-अपने कर्तव्य का पालन करने से शासक और सेवक के मध्य एक विश्वास पनपेगा जो मूल्यों के संरक्षण का सबसे महत्वपूर्ण उपाय होगा। इसी कारण महामना गांधीजी ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आध्यात्म के महत्व को स्वीकार किया है, तभी तो भारतीय आध्यात्म को सभी धर्मों में श्रेष्ठ बताते हुए उसमें निहित सहिष्णुतावादी विचारधारा का यशगान किया गया हैं वास्तव में हिन्दू सामाजिक वर्ण व्यवस्था की आधारशिला भौतिक उन्नति की अपेक्षा आध्यात्मिक उन्नति के प्रति सार्वभौमिक विश्वास है। जो राजनीतिक अध्यात्मिकता को पोषित करने वाला है।

REFERENCES

1. गाँधी, एम.के. - द माइन्ड ऑफ महात्मा गाँधी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन, 1945.
2. अग्रवाल, श्रीमन्नारायण, - स्वतन्त्र भारत के गाँधीवादी शासन विधान, नवयुवक साहित्य मन्दिर, इन्दौर, 1946.
3. गांधी जी : आत्मकथा, 1948,
4. गाँधी, एम.के. - विश्व शान्ति का अहिंसक मार्ग, नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस, अहमदाबाद, 1959.
5. गाँधी, एम.के, - गाँधीज आइडियाज युनिटी इन डाइवर्सिटी, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 1968.
6. कुमार मनोज, रंजन रवि, - महात्मा गाँधी, कल्पना प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999.
7. कुमार, हरीश, - गाँधी सामाजिक राजनीतिक परिवर्तन, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2006.
8. गाँधी, एम.के, - महात्मा गाँधी मेरे सपनों का भारत, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 2008.
9. कुमार, रविन्द्र, - गाँधीयन थॉट न्यू वर्ल्ड न्यू डायमेन्शन्स, कल्पाज पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2008.
10. अग्रवाल पी.के, अग्रवाल शिप्रा, - गाँधी विचार और हम, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 2010.
11. सिंह, रामजी, - गाँधी दृष्टि, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2010.
12. गाँधी मार्ग, गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली (पत्रिका)
13. यंग इण्डिया, अहमदाबाद (पत्रिका)
14. हरिजन, अहमदाबाद (पत्रिका)